19

घर जहां आत्मा वास करता है ...

घर में भलाई

(गलातियों 5:22, 23)

यदि हमें ''घर'' या ''परिवार'' का विवरण देना हो तो हम इस विशेषण का इस्तेमाल कर सकते हैं? ''टूटा''? ''अशान्त''? ''पिछड़ा हुआ''? ''दबा हुआ''? ''दुखी''? परमेश्वर इसका वर्णन कैसे करेगा? शायद वह ''अच्छा'' विशेषण का इस्तेमाल करेगा। जब आदमी अकेला था तो परमेश्वर ने कहा, ''आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं'' (उत्पत्ति 2:18क)। फिर उसने आदम के लिए उससे मेल खाती एक सहायक बनाई। उसने निष्कर्ष निकाला होगा कि आदम के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है, इस कारण घर में उसके साथ रहने वाला साथी होना अच्छा है। निश्चय ही परिवार के प्रमुख कार्यों में से एक साथ देना है। घर अच्छा है!

घर के लिए आत्मा के इस छठे गुण को लागू करने में हमें कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए और यह गुण ''भलाई'' है। गलातियों 5:22, 23 कहता है, ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, *भलाई,* विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।''

इस पाठ में हम यह चर्चा करना चाहते हैं कि एक सफल घर को ''घर जहां आत्मा का वास है'' बनाने में भलाई कैसे सहायक हो सकती है।

यह भलाई क्या है?

आरम्भ करते हुए हमें यह समझने की आवश्यकता है कि भलाई आत्मा के फल का एक भाग है। हमारे जीवनों में भलाई है, क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है। कोई भी सचमुच में अच्छा या जहां तक हो सके अच्छा तब तक बनने की उम्मीद नहीं कर सकता जब तक वह मसीही नहीं है और पवित्र आत्मा उसके अन्दर वास नहीं कर रहा। परन्तु जब हम मसीही हैं तो हमें उस ''भलाई'' की उम्मीद करनी चाहिए कि हम जहां भी हों चाहे घर में, उसका पता चले।

इस संदर्भ में ''भलाई'' के लिए पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द *agathos* का एक रूप है। डब्ल्यू. ई. वाइन ने कहा है कि ''भलाई'' एक ''नैतिक गुण'' है। उसने और कहा कि विशेषण *agathos* से वर्णित की गई बात कुछ ऐसी है ''जो अपने स्वभाव या रचना में 'अच्छी' होने के कारण अपने प्रभाव में लाभकारी है।''[1] इस शब्द में ''पीछे लगने वाले गुण भी हैं जिनके द्वारा आवश्यक नहीं कि दूसरों से भलाई कोमलता से हो।''[2] जे. बी. लाइटफुट ने संकेत दिया कि यह शब्द दूसरों की ओर से दयालुता के कार्यों का सुझाव देता है।[3]

दोनों आयतें जहां इस शब्द का इस्तेमाल किया गया है इसे बेहतर ढंग से समझने में हमारी

सहायता कर सकती हैं। रोमियों 15:14 कहता है, ''हे मेरे भाइयो; मैं आप भी तुम्हारे विश्वास में निश्चय जानता हूं, कि तुम भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर हो और एक-दूसरे को चिता सकते हो।'' इफिसियों 5:9 में पौलुस ने लिखा ''(क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)।'' तो हम देखते हैं कि भलाई आदर्श मसीही जीवन का भाग है और ज्ञान होने और दूसरों को निर्देश देने या समझाने के योग्य होने के साथ जुड़ी है। इसके अलावा यह धार्मिकता और सच्चाई के समानान्तर है। यह ज्योति में होने अर्थात परमेश्वर और उसके साथ जुड़े होने का परिणाम है।

ऐसी भलाई मसीही जीवन और मसीही घर की पहचान होनी चाहिए। यदि ऐसा हो, तो उसके बाद क्या होगा?

भलाई किस प्रकार से घर के भीतर लोगों को प्रभावित करती है

घर जिसमें आत्मा वास करता है भलाई करने वाले अच्छे लोगों से बनता है। अच्छे लोगों से बात करना अजीब लग सकता है, जब यीशु ने कहा, ''भला तो एक ही है'' (मत्ती 19:17ख)। पर इस शब्द का इस्तेमाल लोगों के लिए भी हुआ है। उदाहरण के लिए प्रेरितों 11:24क में बरनबास को ''भला मनुष्य'' कहा गया है। यह वह खूबी है जो केवल पूर्ण रूप में पाई जाती है, पर इसे हम कुछ हद तक बांट सकते हैं। इस अर्थ में हमें परमेश्वर के जैसे बनना आवश्यक है (देखें इफिसियों 5:1)।

यह तथ्य कि धनवान, जवान हाकिम ने यीशु को ''भला'' कहा हमें भला होने के अर्थ के बारे में कुछ बताता है। भला होना यीशु के जैसे बनना है? कम से कम तीन प्रकार से: (1) भला होना *शुद्ध होना* है। यीशु बिना पाप के था (इब्रानियों 4:15)। (2) भला होना *भलाई करना* है। ''यीशु भलाई करता फिरा'' (प्रेरितों 10:38)। गलातियों 6:10 कहता है, ''जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें''; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ। (3) भला होना *सच बोलना* है। यीशु की पहचान परमेश्वर की ओर से गुरु के रूप में थी (यूहन्ना 3:2)। प्रेरितों 11:24 के अनुसार बरनबास एक भला मनुष्य था। उसकी भलाई से प्रभु की कलीसिया में कई लोग मिल गए। जिस अर्थ में यीशु भला था उस अर्थ में व्यक्ति वास्तव में ''भला'' नहीं हो सकता। यदि वह दूसरों को मन फिराव के लिए मोड़ने की कोशिश किए बिना उन्हें खोने की अनुमति देता है।

इस अर्थ में घर अपनी भलाई के लिए कैसे जाना जा सकता है? घर में जहां आत्मा वास करता है भलाई कैसे निकल सकती है?

पहले तो घर के अगुओं का नया जन्म होना आवश्यक है। भलाई मसीही लोगों की पहचान है।

दूसरा, सिखाया जाना आवश्यक है। घर में बच्चों और व्यस्कों को दूसरों के लिए सहायक और दयालु होना, अपने से पहले दूसरों का सोचना और शुद्ध और सरल होना आवश्यक है। इसके अलावा यह सिखाया जाना अनुशासन से हो। फिर सिखाया जाना बातों से अधिक होना चाहिए। माता-पिता को नमूना देकर सिखाना चाहिए।

तीसरा, घर में ऐसा माहौल होना आवश्यक है जिसमें भलाई को एक बड़ा गुण माना जाए।

हम अपने बच्चों को बताते हैं, ''हो सकता है कि तुम स्कूल में सबसे सुन्दर या सबसे अधिक नम्बर लेने वाले या सबसे बढ़िया धावक न बन सको; पर तुम सबसे अच्छे लोग बन सकते हो।'' हमें भलाई करने की बातें अपने बच्चों से करनी आवश्यक हैं। भला करने पर परिवार के रूप में दिन की गतिविधियों में की जाने वाली चर्चा पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। बच्चों द्वारा की जाने वाली भलाई का प्रोत्साहित किया जाना और उन्हें प्रतिफल दिया जाना चाहिए। क्या हमें स्कूल में अच्छा करने या कोई विशेष गतिविधि में श्रेष्ठ काम करने पर अपने बच्चों को प्रतिफल नहीं देते? शायद हमें बुजुर्गों की सहायता करने शायद दूसरों के लिए भले कार्य करने पर भी ऐसे ही प्रतिफल देना चाहिए।

भलाई घर के बाहर लोगों को कैसे प्रभावित करती है

यदि घर में सचमुच भलाई है तो वह भलाई घर से बाहर की ओर बहेगी। घर कलीसिया में और समाज में और वास्तव में पूरे संसार में दूसरों के लिए सहायता और आशीष का श्रोत बन जाता है।

भलाई से भरा घर कैसा होता है? बाइबल इसके कई उदाहरण देती है।

बाइबल के उदाहरण

प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला। प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला के घर की तरह भलाई से भरा घर था। वे पौलुस के सहकर्मी थे; वे ''व्यावसायिक मिशनरी'' थे। वे दूसरों को (विशेषकर अपुल्लोस [प्रेरितों 18:24-26]) को सिखाते और उनके घर में कलीसिया इकट्ठा होती थी।

1 तीमुथियुस 5:10 वाली स्त्री। भलाई से भरा घर उस स्त्री के घर जैसा है जिनका वर्णन 1 तीमुथियुस 5:10 में किया है। वह ''भले काम में सुनाम थी। उसने बच्चों का पालन-पोषण किया [था], पाहुनों की सेवा की [थी], ... पवित्र लोगों के पांव धोए [थे], ... और हर एक भले काम में मन लगाया [था]।''

प्राचीनों के घर। भलाई को दिखाने वाला घर प्राचीनों के घर जैसा है जिन्हें ''पहुनाई करने वाले'' होना आवश्यक है (1 तीमुथियुस 3:2)।

फिलेमोन। भलाई को बांटने वाला घर फिलेमोन के घर जैसा है। उसके घर में कलीसिया इकट्ठा होती थी (आयत 2)। उसने पवित्र लोगों के मन हरे किए थे (आयत 7) और ऐसा व्यक्ति था जिस पर प्रेरितों के लिए अतिथि गृह देने का भरोसा किया जा सकता था (आयत 22)।

गयुस। अपनी भलाई के लिए प्रसिद्ध घर गयुस के घर जैसा है जिसने भाइयों, विशेषकर परदेसियों की सेवा की और उन्हें सफ़र में भेजा (3 यूहन्ना 5-8)।

अब्राहम। भलाई से भरा घर अब्राहम के घर जैसा है जिसने तीन परदेसियों की पहुनाई की थी (उत्पत्ति 18:1-8; तुलना करें इब्रानियों 13:2)।

समकालीन उदाहरण

इस गुण को और पहचान दिलाने के लिए आइए ''वास्तविक जीवन'' के कुछ उदाहरणों पर विचार करते हैं:

घर का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए करना। हम एक परिवार में इकट्ठा होते थे। जो गलत शिक्षा से परिवर्तित हुए थे। घर का आदमी उस शिक्षा के लिए इतना जनून रखता था कि उसने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के लिए अपने घर में विशेष रूप में एक अतिरिक्त कमरा बना लिया था। मसीही परिवार अपनी ओर से ''नबी का कमरा'' बनाने का निर्णय ले सकता है। जो बाहर से आने वालों के लिए अलग से बना हो।

व्यावसायिक मिशनरियों के रूप में सेवा करना। हम एक परिवार को जानते थे जो ऑस्ट्रेलिया में आकर अपने खर्च में मिशनरी काम करते थे। उस परिवार के आदमी ने एक वैन खरीद ली ताकि उनके पास कलीसिया में और लोगों को लाने के लिए बड़ी गाड़ी हो जाए। उसने अपने परिवार की आवश्यकता से कहीं बड़ा बाग लगा दिया ताकि कलीसिया में हर किसी को कुछ खाना मिल सके। एक और परिवार जो ऑस्ट्रेलिया के निवासी थे, क्वींजलैंड, ऑस्ट्रेलिया में वहां कलीसिया स्थापित करने के लिए आ गया, क्योंकि वहां कोई कलीसिया नहीं थी। पिता अपना काम करता और कलीसिया का खर्च उठाता और परिवार के लोगों ने उस छोटी चर्च बिल्डिंग में (जिसमें बैपटिज़री भी थी) अपना गैराज बना लिया।

परोपकार के काम करना। डैटरोयट, मिशिगन यानी उस इलाके में हम एक परिवार को जानते हैं, जिन्होंने (अपनी ओर से, न कि कलीसिया के काम के रूप में) टोकरियां बनाना और उन्हें साल के विशेष समयों पर गरीब और लाचार लोगों को देना अपनी आदत बना ली। उन्होंने उस काम में अपने बच्चों को भी लगा लिया। कई परिवार और तरह की परोपकारी गतिविधियों में अपने बच्चों को लगा लेते हैं। उदाहरण के लिए माता-पिता बीमारों या बुज़ुर्गों को देखने के लिए अपने बच्चों को साथ ले जा सकते हैं।

मेहमाननवाज़ी दिखाना। कई परिवार, परिवार के पर्व या इकट्ठा होने पर उन लोगों को अपने साथ खाने और परिवार के अनुभव के लिए अपने साथ बुला लेते हैं जिनके परिवार नहीं होते। जब मैं छोटा था, तो कलीसिया में कुछ स्त्रियां होती थीं जो रविवार के दिन काफ़ी सारा खाना तैयार करती थीं ताकि कलीसिया में यदि कोई बाहर से आता है, तो वे उससे रविवार शाम खाने के लिए बुला सकें। उन सभाओं में कोई भी ''बिन बुलाए'' नहीं रहता था। मुझे एक परिवार की बात भी याद है जिसके बारे में मैंने पढ़ा था कि वे खाने की मेज़ पर कुछ अतिरिक्त जगह रहने देते थे ताकि यदि खाते समय कोई आ जाए तो वह उनके साथ शामिल हो सके। और लोग भी हैं जो ऐसा ही कुछ करते हैं, या वे आगन्तुकों को अपने साथ खाने के लिए रेस्तरां में ले जाते हैं।

बच्चों की देखभाल। कुछ परिवारों ने अनाथालयों में से बच्चे गोद लेकर या उनका खर्चा देकर अपने घरों में ले आए हैं। ऐसा करके उन्होंने अपने घरों का इस्तेमाल भलाई करने के लिए किया है।

कलीसिया की सभाओं की मेज़बानी करना। संसार के कई भागों में, कलीसिया लोगों के घरों में इकट्ठा होती है। मैं एक परिवार को जानता था जो कई साल तक शनिवार को घर से बाहर नहीं जाते थे। रविवार को घर से बाहर नहीं रहना चाहते थे, क्योंकि उनके घर में कलीसिया इकट्ठा होती थी।

सिखाना, प्रचार करना और मिशन कार्य करना। कई परिवारों ने मिशन कार्य करने को अपनी प्राथमिकता बना लिया है। परिवार के लोगों ने मिशनरियों को लिखना या उन्हें पैसे भेजना या

वर्ल्ड बाइबल स्कूल जैसे कार्यों में भाग लेकर उनकी सहायता करना अपना शोक बना लिया है। अन्य ने, परिवारों के रूप में अपने घरों में ''प्रार्थना सभा'' रखकर, बच्चों को मिलने या सिखाने के लिए अपने साथ ले जाकर, आसपास के स्थानों या बाहर जाकर व्यक्तिगत काम को प्रोत्साहित किया है। अन्य परिवारों ने बाइबल क्लासों में सिखाने में अपने बच्चों को लगाया है।

परमेश्वर के लिए अपने घरों का इस्तेमाल करने में रुकावटें

इन उदाहरणों में दिए लोगों द्वारा दिए कामों जैसे काम करके परमेश्वर के लिए अपने घरों का इस्तेमाल करने से हमें कौन सी चीज़ रोकती है? सम्भवतया ऐसी भागीदारी में तीन रुकावटें हैं।

परिवार की समझ न होना। हो सकता है कि हम ने ''परिवार'' की समझ खो दी हो। जब हम कभी इकट्ठे खाना नहीं खाते, या इकट्ठे और काम नहीं करते तो हम परिवार होने की कोई भावना कैसे पा सकते हैं? कलीसिया परिवार होना चाहिए; बाहर जाना और कलीसिया और समाज और अपने आस-पास में दूसरे लोगों के साथ भलाई करना हमारे अस्तित्व का एक बढ़ा उद्देश्य है।

आत्म-केन्द्रित होना। हमारा आत्म केन्द्रित होना हमें घर को केन्द्र बनाने से रोकेगा जहां से भलाई का प्रकाश चमकना चाहिए। यदि हम केवल अपनी ही सेहत की कमी, अपने बच्चों, अपने परेशानियों, अपने बिलों और अपने सांसारिक लक्ष्यों की ही चिन्ता करते हैं तो हम दूसरों की सहायता करने में समय या प्रयास नहीं लगाएंगे।

कमज़ोर प्राथिमकताएं परिवार के रूप में हमें दूसरों का भला करने से रोकेंगी। आज मसीही परिवारों के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में से एक गलत प्राथमिकताओं का होना है। हमें धन, स्वास्थ्य, शिक्षा, खेलों, सम्पत्ति, सांसारिक प्राप्तियों, सुन्दरता, प्रसिद्धि, आमोद प्रमोद, मनोरंजन जैसी अन्य दिलचस्पियों को अच्छा बनने और भलाई करने से बढ़कर महत्वपूर्ण नहीं बनने देना चाहिए। यदि हम भलाई के फल की आशा रखते और सचमुच के मसीही घर चाहते हैं जिन में आत्मा का वास हो, अर्थात घरों की पहचान भलाई करने से हो तो हमें अपने परिवारों में मसीहियत को सबसे बड़ी प्राथमिकता बनाना आवश्यक है।

सारांश

जेम्स पो. बेयर्ड[5] ने एक बार एक रविवार को एक विशेष मण्डली में जाकर वहां प्रचार किया। वह उस कलीसिया से और उसके कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुआ।

उसने कहा कि उस मण्डली में एक-दूसरे के लिए प्रेम और कलीसिया के लिए जोश साफ़ दिखाई देता था। अगुओं ने काम के सक्रिय कार्यक्रम की योजना ऐसे बनाई थी जिसमें कलीसिया का हर व्यक्ति भाग ले और कलीसिया अपने समाज और आस-पास के संसार दोनों तक पहुंचे। इसके परिणाम स्वरूप कलीसिया बढ़ रही है। भाई बेयर्ड ने कहा कि उस रविवार प्राप्त परिवारों की गिनती और गुण से प्रभावित हुआ था।

आराधना सेवा के पश्चात एक अच्छे मसीही परिवार के साथा खाना खाने के लिए वह घर गया। लगा कि इन लोगों ने उसके उस विश्वास की पुष्टि कर दी जो उसे उन्हें देखकर सुबह को

हुआ था। उस परिवार में मसीही माता-पिता थे और स्पष्ट है कि बहुत ही अच्छे मसीही नवयुवा।

उस दोपहर को उनके मसीही व्यवहार को देखते हुए उसके दिमाग में पहली बात यह थी कि ''अच्छी कलीसियाओं से अच्छे घर बनते हैं।'' दिन बीतने पर वह उस परिवार के लोगों की भलाई से और से और प्रभावित हुआ और उसने कहा कि उसके दिमाग में एक और बात आई है: ''अच्छे घरों से अच्छी कलीसियाएं बनती हैं।'' फिर उसने कहा, ''मैंने निष्कर्ष निकाला कि उन बातों में कोई विरोधाभास नहीं है। दोनों सही हैं। अच्छी कलीसियाएं अच्छे घरों को बनाने में सहायता करती हैं और अच्छे घर अच्छी कलीसियाओं को बनाने में सहायता करते हैं।'' वह बिल्कुल सही था! अच्छी कलीसिया बनाने में सहायता के लिए शायद सबसे बढ़िया बात अपने घरों को इस अर्थ में बेहतर बनाने में सहायता करना है कि वे और मसीही घर बनें।

आपके घर को क्या नाम दिया जा सकता है? क्या यह ''आधुनिक घर'' या शायद ''बहुत सजा हुआ घर'' है। क्या उसमें आने वाले लोग उसमें ''व्यस्त घर'' या ''खुशहाल घर'' के रूप में याद रखेंगे? इससे भी बढ़कर क्या यह ''अच्छा घर'' है क्या आपके घर की पहचान ''भलाई'' है?

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम वाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 273-74. [2]वही, 274; ''कोई भलाई और सच्चाई के लिए अपना जोश डांटने, सुधारने और समझाने में दिखा सकता है'' (रिचर्ड सी. ट्रेन्च, *सिनोनिम्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट* [लंदन: पृष्ठ.नहीं., 1880; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953], 234)। [3]जे. बी. लाइटफुट, द *एपिस्टल ऑफ़ सेंट पॉल टू द गलेशियंस* (डब्लिन: ट्रिनिटी कॉलेज, 1865; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1968), 213. लाइटफुट ने ''धीरज'' को ''सहनशील,'' ''कृपा'' को ''निष्क्रिय,'' और ''भलाई'' को ''सक्रिय'' के रूप के बारे में बताया है। उसका अभिप्राय था कि '' 'भलाई' हरकत में 'दयालुता' है।'' [4]यूहन्ना 7:12 भी देखें: ''वह भला मनुष्य है।'' [5]जेम्स ओ. बेयर्ड, 1970 के दशक में ब्लैक टाउन ऑफ़ चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में प्रस्तुति। बेयर्ड ओक्लाहोमा क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी चर्च के काउंसिलर (पूर्व प्रधान) थे।